प्रतिबिम्ब

A Monthly E-Newsletter of Rana Pratap PG College Sultanpur

वर्ष . 01 अंक . 08 जुलाई 2024

RANA PRATAP POST GRADUATE COLLEGE SULTANPUR
CIVIL LINES-1, SULTANPUR-228001 (U.P.)
(Affiliated : Dr. Ram Manohar Lohiya Avadh University, Ayodhya)
www.rppgcollege.ac.in

संरक्षक

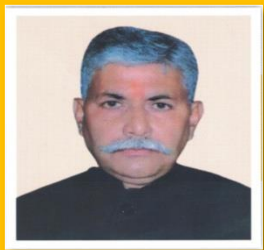

एडवोकेट संजय सिंह (अध्यक्ष) एडवोकेट बालचंद्र सिंह (प्रबंधक) प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी (प्राचार्य)

प्रधान सम्पादक

ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह 'रवि'
असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी

सह सम्पादक

डॉ महमूद आलम
विभागाध्यक्ष उर्दू

डॉ. मंजू ठाकुर
असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति

प्रमोद श्रीवास्तव
प्रभारी कम्प्यूटर सेंटर

प्रतिनिधि

डॉ संतोष कुमार सिंह(अंश)
शिक्षा संकाय

चौरसिया गोरखनाथ
विज्ञान संकाय

डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह
कला संकाय

यशस्वी प्रताप सिंह
वाणिज्य संकाय

विद्यार्थी प्रतिनिधि

शिक्षा संकाय
सत्येन्द्र शुक्ल
(बीएड द्वितीय वर्ष)
अंशिका सिंह
(बीएड प्रथम वर्ष)
कला संकाय
रिया श्रीवास्तव
(बीए पंचम सेमेस्टर)
प्रतिमा मिश्र
(बीए प्रथम सेमेस्टर)

विज्ञान संकाय
अनुराग यादव
(बीएससी पंचम सेमेस्टर)
अनुपमा वर्मा
(बीएससी पंचम सेमेस्टर)
लक्ष्मी सिंह
(बीएससी प्रथम सेमेस्टर)
वाणिज्य संकाय
आयुष मिश्रा
(बीकाम तृतीय सेमेस्टर(

रचनायें / विचार/ समाचार / फोटो आदि भेजने का पता -

rppgcollegenewsletter@gmail.com

- लिखित सामग्री यूनीकोड या मंगल फांट में ही टाइप कर के भेजें। लिखित सामग्री फोटो, जेपीजी, पीडीएफ आदि में स्वीकार नहीं की जायेगी।
- News Letter के सम्बन्ध में किसी भी जानकारी / समस्या / सुझाव आदि के लिए अपने संकाय प्रतिनिधि से सम्पर्क कर सकते हैं।

सम्पादकीय

प्रधान सम्पादक

ग्रीष्मावकाश और सेमेस्टर परीक्षाओं के बाद महाविद्यालय में इन दिनों प्रवेश का कार्य चल रहा है साथ ही नवीन सत्र की कक्षाएं भी शुरू हो गई हैं।ऐसे में नव प्रवेशी विद्यार्थियों को महाविद्यालय की संस्कृति से अवगत कराना हम सबका दायित्व है। सकारात्मक वातावरण में महाविद्यालय का अनुशासन और पठन पाठन का माहौल बना रहे यह जिम्मेदारी भी हम सभी की है। नवीन सत्र में नवीन संकल्प के साथ परिसर में बेहतर शैक्षिक वातावरण बने इसके लिए लगातार कार्य करते रहने की आवश्यकता है ।

गुरु शिष्य परम्परा भारतीय संस्कृति का मूलभूत अंग है। विश्वास , श्रद्धा और समर्पण की इस परम्परा में जहां एक ओर गुरु विषय ज्ञान के साथ जीवन की सीख, नैतिक मूल्य और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं तो दूसरी ओर शिष्य गुरु के पास सम्मान , विनम्रता और सीखने की इच्छा के साथ आकर स्वयं को समर्पित कर देता है। इस महीने 21 तारीख को गुरु पूर्णिमा का पर्व है। हम सबके जीवन निर्माण में गुरुओं की अहम भूमिका है।जिन गुरुओं ने हमें गढ़ने में अपना योगदान दिया है, उनके प्रति हमें कृतज्ञता का भाव बनाए रखना चाहिए । उसे व्यक्त करने के लिए सनातन परम्परा में एक विशेष दिन निर्धारित है। प्रतिवर्ष आषाढ़ मास की पूर्णिमा पर यह पर्व मनाया जाता है। इस दिन गुरुओं के मार्गदर्शन और उनके द्वारा दिए गए ज्ञान के लिए उनका आभार व्यक्त करते हैं। अब यह केवल आध्यात्मिक ही नहीं अकादमिक गुरुओं के प्रति भी सम्मान का पर्व बन गया है। शिक्षकों के साथ साथ जिन लोगों ने भी आपके जीवन में गुरु की भूमिका निभाई है उन सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का यह सुअवसर है।

भारतीय परम्परा से प्रभावित विभिन्न संस्कृतियों में उत्साह के साथ मनाये जाने वाले इस पर्व में हम सम्मान , समर्पण और आजीवन सीखने के सिद्धांतों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हैं।

आप सभी को गुरु पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएं..

आपका अपना --

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

News & Events

प्रोफेसर एम पी सिंह बिसेन की सेवानिवृत्ति पर आयोजित हुआ सम्मान समारोह

राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य व समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष प्रोफेसर एम पी सिंह बिसेन पैंतीस वर्षों की लम्बी सेवा यात्रा पूरी कर तीस जून को सेवानिवृत्त हो गए । इस अवसर पर महाविद्यालय के पुस्तकालय कक्ष में एक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। सम्मान समारोह को बतौर अध्यक्ष सम्बोधित करते हुए क्षत्रिय शिक्षा समिति के अध्यक्ष एडवोकेट संजय सिंह ने कहा कि शिक्षक कभी रिटायर नहीं होता। प्रोफेसर एम पी सिंह सेवानिवृत्ति के बाद शिक्षा, साहित्य व अन्य गतिविधियों में सक्रिय रहते हुए महाविद्यालय से जुड़े रहेंगे। प्राचार्य प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी ने कहा कि प्रोफेसर एम पी सिंह बिसेन ने शिक्षा और शोध में महत्वपूर्ण कार्य के साथ साथ सामाजिक जीवन में भी सक्रिय योगदान दिया है। उनका व्यक्तित्व प्रेरणा दायक है।

प्रबंधक एडवोकेट बालचंद्र सिंह ने कहा कि प्रोफेसर एम पी सिंह महाविद्यालय की एक पहचान हैं। यह पहचान सदैव बनी रहेगी। प्रोफेसर एम पी सिंह ने कहा कि मैं जो कुछ भी हूं वह राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय की वजह से ही हूं। मेरी पहचान और प्रगति में महाविद्यालय का योगदान महत्वपूर्ण है इसलिए इससे कभी अलगाव नहीं हो सकता । प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष एडवोकेट शुभ नारायण सिंह, पूर्व प्रबंधक बजरंग बहादुर सिंह, प्रोफेसर शैलेन्द्र प्रताप सिंह, डॉधीरेन्द्र कुमार आदि ने भी अपने विचार व्यक्त . किए।समारोह का संचालन उप प्राचार्य प्रोफेसर निशा सिंह, प्रशस्ति पत्र वाचन डॉअखिलेश सिंह व आभार ज्ञापन . बृजेश सिंह ने किया।.असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ अध्यक्ष, प्रबंधक व प्राचार्य ने स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र,अंगवस्त्र तथा सूटकेस आदि भेंट कर प्रोफेसर एम पी सिंह बिसेन को सम्मानित किया।

साथ ही सभी विभागों , शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों व प्रबंध समिति के सदस्यों ने भी पुष्पगुच्छ और सप्रेम भेंट आदि देकर प्रोफेसर एम पी सिंह को सम्मानित किया। इस अवसर पर पूर्व प्रबंधक सुरेन्द्रनाथ सिंह, ठाकुर प्रसाद सिंह, एमजीएस प्रबंधक डॉ विनोद सिंह, क्षत्रिय शिक्षा समिति के सचिव रमेश सिंह टिन्नू, पूर्व प्राचार्य डॉएस बी . सिंह, भाजपा नेता व पूर्व समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ सिंह.पी.एम., सुशील कुमार गौतम समेत महाविद्यालय परिवार के सदस्य उपस्थित रहे।

News & Events

कालेज ने की बी एड प्रवेश परीक्षा में गुड़ और शीतल जल की व्यवस्था

उत्तर प्रदेश संयुक्त बी एड प्रवेश परीक्षा में राणा प्रताप पी जी कॉलेज की तरफ से केशकुमारी राजकीय बालिका इंटरमीडिएट कॉलेज, राजकीय इंटरमीडिएट कॉलेज, महात्मा गांधी स्मारक इंटरमीडिएट के परीक्षा केंद्र पर गुड़ और शीतल जल की व्यवस्था की गई । भीषण गर्मी में परीक्षार्थियों हेतु गुड़ और शीतल जल की व्यवस्था को परीक्षा केंद्रों , अभिभावकों और परीक्षार्थियों ने खूब सराहा। इस अवसर पर महाविद्यालय के अध्यक्ष संजय सिंह, प्रबंधक बालचंद्र सिंह , दिलीप सिंह , समर बहादुर सिंह, बिनय सिंह,रामलाल मिश्रा, रोहित कुमार, सुमित कुमार, अभिषेक सिंह, विष्णु पाल, ऋषिराम व परमेन्द्र सिंह उपस्थित रहे।

उत्तम पर्यावरण हेतु मानव श्रृंखला द्वारा एकजुटता का संदेश दिया

अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में राजनीति विज्ञान और संस्कृत विभाग के छात्रछात्राओं ने मानव श्रृंखला बनाकर यह - संदेश दिया कि हम लोग सामूहिक रूप से मिलकर ही पर्यावरण को स्वच्छ बना सकते हैं। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर डी के त्रिपाठी ने बच्चों को प्रेरित किया और सामूहिक रूप से महाविद्यालय के उद्यान की साफ सफाई के लिए उनका उत्साह वर्धन किया। साथ ही साथ यह बताया कि यदि युवा पीढ़ी सजग रहेगी तो निश्चित रूप से वह दिन दूर नहीं कि जब पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में सभी सजग और सचेत रहेंगे । राजनीति विज्ञान की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ मंजू ठाकुर ने बताया की विश्व पर्यावरण दिवस यह संकेत देता है कि हम अपने उत्तरदायित्व को समझें और व्यक्तिगत रूप से पर्यावरण संरक्षण हेतु पौधारोपण करें, क्योंकि वृक्ष ही जीवन है यदि भौतिकवादी होकर मनुष्य पेड़ों की कटाई बंद नहीं करेगा और नए पौधों का रोपण नहीं करेगा तो निश्चित रूप से नाना प्रकार की प्राकृतिक आपदाएं आती रहेंगी।

राजनीति विज्ञान विभाग के छात्रछात्राओं ने महाविद्यालय के प्रांगण में पौधारोपण भी किया । राष्ट्रीय सेवा - योजना की कार्यक्रम अधिकारी संस्कृत विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ नीतू सिंह ने धन्यवाद किया । स्वच्छता कार्यक्रम में डॉ अंजना सिंह , डॉ वीना सिंह , डॉ हीरालाल यादव एवं डॉ प्रदीप कुमार सिंह आदि उपस्थित रहे।

News & Events

ज्येष्ठ मंगल पर बांटा गया शर्बत

राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय में ज्येष्ठ मंगल के शुभ अवसर पर विद्यार्थियों हेतु शर्बत वितरण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के प्रबंधक बालचंद्र सिंह एडवोकेट एवं महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो डी के त्रिपाठी द्वारा महाविद्यालय के निकट स्थित हनुमानजी के मंदिर में पूजन एवं भोग लगाने से हुआ। प्रबंधक बालचंद्र सिंह ने बताया कि इस समय विश्वविद्यालय की परीक्षा चल रही हैं , तीनों मीटिंग के परीक्षार्थियों हेतु शीतल शर्बत की व्यवस्था की गई है। प्राचार्य प्रो डी के त्रिपाठी ने कहा कि महाविद्यालय में विश्वविद्यालय की परीक्षा के साथ वायबा एवं प्रयोगात्मक परीक्षा चल रही है, इस हेतु शर्बत के साथ शीतल जल की व्यवस्था कर्मचारियों द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी की सीट पर ही समय समय पर सुलभ करायी जा रही है । इस अवसर डॉ मंजू ठाकुर, डॉ नीतू सिंह,डॉ अंजना सिंह , डॉ हीरालाल यादव, डॉ संतोष अंश, शिवानी पाण्डेय, विनय सिंह, धीरेन्द्र मिश्रा, समर बहादुर सिंह, राम लाल मिश्रा, राजेश शर्मा, राजेश कुमार आदि लोग मौजूद रहे। यहाँ हजारों विद्यार्थियों ने शर्बत पिया।

पर्यावरण दिवस पर समाजशास्त्र विभाग ने आयोजित की संगोष्ठी

राणा प्रताप पी जी कॉलेज के समाजशास्त्र विभाग द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में संगोष्ठी को संबोधित करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो डी के त्रिपाठी ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस 2024 का थीम है -'भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखा सहनशीलता' इसका फोकस 'हमारी भूमि' नारे के तहत भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखे पर केंद्रित कर किया गया है। यह एक ऐसा दिन है जिस दिन हम पर्यावरण के बारे में जागरूकता फैलाते हैं और इसे संरक्षित करने की आवश्यकता के बारे में बताते हैं। इसके अलावा, हरित पर्यावरण और प्रकृति के संरक्षण की वकालत करना आवश्यक है। यह काफी सरल है क्योंकि जब हम आज पर्यावरण का संरक्षण करेंगे तो आने वाली पीढ़ियाँ एक स्वस्थ जीवन जी सकेंगी। हम इतने स्वार्थी नहीं हो सकते और अपने लिए सभी संसाधनों का उपयोग नहीं कर सकते। विश्व पर्यावरण दिवस लोगों को उन मुद्दों के बारे में जागरूक करने का सही अवसर है जिनका हम सामना कर रहे हैं और इसे बचाने में कोई कैसे योगदान दे सकता है। हमेशा याद रखें कि प्रकृति ने हमें जो उपहार और आशीर्वाद दिए हैं वे अमूल्य हैं। सभी के बेहतर भविष्य और जीवन के लिए उन सभी को संरक्षित करना बहुत ज़रूरी है। हमेशा याद रखें कि पर्यावरण संरक्षण के छोटेछोटे कदम बड़े - लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करेंगे। जंगलों से लेकर समुद्रों और मिट्टी से लेकर हवा तक प्रकृति के सभी संसाधनों को हमें संरक्षित करना चाहिए। संगोष्ठी का संचालन डॉ संतोष अंश ने किया। संगोष्ठी के बाद विद्यार्थियों द्वारा विविध प्रकार के पौधे कॉलेज को दान किये गए और इन्हें कैम्पस में लगाया गया। इस अवसर पर बृजेश सिंह,डॉ अखिलेश सिंह, डॉ शालिनी सिंह, डॉ नीतू सिंह, डॉ वीना सिंह, डॉ अंजना सिंह, डॉ मंजु ठाकुर, डॉ हीरालाल यादव,विष्णु पाल, अभिषेक सिंह के साथ एम ए समाजशास्त्र के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

News & Events

कुलपति ने किया परीक्षा का निरीक्षण

डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या की कुलपति प्रो. प्रतिभा गोयल, कुल सचिव डॉ. अंजनी कुमार मिश्र एवं परीक्षा नियंत्रक उमानाथ सेमेस्टर परिक्षाओं का औचक निरीक्षण करने राणा प्रताप पीजी कालेज पहुंचे। टीम ने प्रश्नपत्र/उत्तर पुस्तिका आदि के रखरखाव की व्यवस्था को देखा। व्यवस्था चाक-चौबंद देखकर कुलपति ने प्राचार्य व प्रबंध समिति की सराहना की ।

प्राचार्य प्रोडीके त्रिपाठी ने सभी परीक्षा कक्ष ., नोडल केंद्र, परीक्षा नियंत्रण कक्ष को दिखाया। कुलपति, कुलसचिव एवं परीक्षा नियंत्रक परीक्षा की शुचितापूर्ण व्यवस्था से संतुष्ट नजर आए । उन्होंने विद्यार्थियों को सीट पर ही उपलब्ध कराए जा रहे शीतल जल व्यवस्था की सराहना की। इस मौके पर डॉअखिलेश सिंह ., डॉविवेक सिंह ., डॉसंतोष अंश ., डॉनीतू सिंह व रामलाल मिश्र आदि मौजूद रहे। .

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित हुआ कार्यक्रम

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर महाविद्यालय में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गये। योग प्रशिक्षक ने शिक्षकों व विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के व्यायाम कराये। साथ ही कर्णिका इंस्टीट्यूट और नवयोग के द्वारा योग किट का वितरण भी किया गया।

स्नातक व परास्नातक कक्षाओं में चल रहा है प्रवेश

राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय में सत्र 2024 - 25 के लिए बीए , बीएससी और बी कॉम में प्रवेश मई माह में ही शुरू हो गया था । इस समय सभी कक्षाओं में तेजी से प्रवेश चल रहा है। प्राचार्य ने बताया कि प्रवेश हेतु कालेज काउंटर से प्रवेश फार्म लिया जा सकता है। विद्यार्थी चाहें तो कालेज की वेबसाइट से भी प्रवेश फार्म डाउनलोड कर सकते हैं। प्रवेश हेतु यूनिक आईडी का होना जरूरी है जो किसी भी कम्प्यूटर से निकलवाई जा सकती है। इसके साथ आधार कार्ड , अंकपत्र, प्रमाण पत्र व फोटो आदि भी लगते हैं। प्रवेश की प्रक्रिया बड़ी ही सहज और सरल है । विद्यार्थी या अभिभावक किसी भी कार्य दिवस में महाविद्यालय आकर अन्य जानकारी ले सकते हैं।

Article

गतिशील समाज में विवाह संस्कार का बदलता स्वरूप

बृजेश कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र
राणा प्रताप पीजी कॉलेज, सुलतानपुर

कोरोना महामारी के पश्चात विवाह लग्न फिर से शुरू हो गया, जिसमें अनेक नवीन परिवर्तन साफ नजर आने लगे हैं । भारतीय समाज में पारंपरिक विवाह से जुड़े आयोजन जहां जनसमूह को कुटुंब में मिलाप का अवसर देते हैं वहीं रीति रिवाज से जुड़े इसके तमाम पक्ष सामाजिक समसरता उजागर करने के साथ ही परंपराओं की प्रासंगिकता को भी बनाए रखते हैं। विवाह के संदर्भ में अगर हिंदी भाषी क्षेत्र की बात की जाए तो लोक के बहु आयामी पक्ष से जुड़े पूर्वांचल की बात ही अनोखी है।

यहां विवाह के रस्मों–रिवाज जहां हर्षोल्लास से भरे होते हैं, वहीं इसके विधि विधान विवाह की रौनक और उसके विविध रंग जीवन के सार्थक संदेश दे जाते हैं। विवाह के आरंभ में जब तिलकोत्सव होता है तब धान पान का आदानप्रदान उसका अहम पहलू होता है। इसके माध्यम से दो परिवारों के एक होने को दर्शाया - जाता है। यहीं से विवाह की आधारभूमि तैयार होती है और उबटन, हल्दी, मेहंदी आदि से मांगलिक कार्यों का आरंभ होता है। धृतढारी और पूजा, मटमंगरा विवाह की महत्वपूर्ण रस्में होती हैं। मटमगरा में जहां तालाब से खोदी गई मिट्टी लाकर मंडप को तैयार किया जाता है तो वहीं धृतढारी की रस्मों से पितरों का पूजन कर आशीष लिया जाता है। मंडप पर गुड़, हल्दी, कन्यादान, लाजाहोम, सिंदूरदान यह सभी संवेदनाओं की भावभूमि से जुड़े महत्वपूर्ण पल होते हैं। विशेष रूप से वधू के लिए भाव का सृजन करने वाले पल कहीं ना कहीं अपने सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ने का कार्य करते हैं। मोहक परंपराओं की शृंखला के अंतर्गत बहू के सर्वप्रथम ससुराल पहुंचने पर लोढ़े से परछन के बाद एक एक पांव डलिया में रखते हुए वधू को घर में प्रवेश कराया जाता है। तरल कुमकुम में पांव रखकर बधू को लोटे में रखे चावल को पैर की ठोकर से गिरा कर घर में प्रवेश को गृह लक्ष्मी के प्रवेश के समान ही महत्वपूर्ण माना जाता है। अब धीरे धीरे-परछन का स्थान आरती ने ग्रहण कर लिया है। आज बड़ाहर नाम की एक अन्य बड़ी ही महत्वपूर्ण प्रथा बदलते परिदृश्य के साथ समाप्त होती जा रही है। एक और नया बदलाव यह दिखाई दे रहा है कि बधू पक्ष के लोग विवाह के कुछ दिन पूर्व वर पक्ष के गांव शहर या कस्बे में अपनी बिटिया को लेकर जाते हैं जहां पर विवाह की सारी रस्में संपादित की जाती है।

जिसके कारण आज वधू पक्ष के घर बारात आने का भी रिवाज समाप्त होता दिखाई पड़ रहा है। ऐसे विवाह से समाज का वास्तविक जुड़ाव कम हो पाता है और सखी सहेलियों की भूमिका खत्म हो जाती है। पहले पड़ोस या मोहल्ले के लोग बिना बुलाए ही दामाद देखने और बेटी को विदा करने के लिए आ जाते थे, लेकिन आज अंध आधुनिकीकरण के कारण यह जुड़ाव कम होने लगा है ।

आजकल आधुनिक समाजों में विवाह के परंपरागत स्वरूप को भारतीय युवाओं द्वारा स्वीकार किए जाने में भी झिझक होने लगी है। आज की हमारी युवा पीढ़ी वैवाहिक बंधन में न रहकर "लिव इन रिलेशन शिप" साथ रहने में विश्वा-में रहना चाहती है। अब ये अविवाहित रहते हुए भी विवाहित के रूप में साथस करने लगे हैं। आज वर्तमान परिदृश्य में हमारे युवा अपना आदर्श सेलिब्रिटीज को मानते हैं और उन्हीं के अनुसार अपनी दैनिक गतिविधियों को भी संपादित करते हैं ।

आज विवाह संस्कार का एक और बदलता स्वरूप सामने आया है । जहां विवाह संस्कार में दो विपरीत लिंगियों का होना आवश्यक था। वहीं गुजरात की क्षमा बिंदु समेत अनेक समलैंगिक जोड़े किसी और से नहीं बल्कि खुद से शादी कर विवाह के एक बदलते स्वरूप का अलग उदाहरण दे रहे हैं । वर्तमान समय में विवाह की अनिवार्यता धीरेधीरे समाप्त होती जा रही है। आज युवक युवतियां विवाह को अपन-े स्वतंत्रता पर आघात मानने लगे हैं। सह शिक्षा के कारण वर वधू के चयन में भी मातापिता की भूमिका - समाप्त होती जा रही है।रोमांस पर आधारित प्रेम विवाहों का महत्व बढ़ता जा रहा है। पत्नी पति को परमेश्वर ना मानकर एक मित्र व सहयोगी समझने लगी है । इन सबके कारण विवाह विच्छेद एवं तलाक की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है ।

वर्तमान परिदृश्य में विवाह प्रणाली के संबंध में समाज की सोच नकारात्मक न होकर सकारात्मक होनी चाहिए जिससे विवाह को सफल बनाया जा सके । इसके लिए हमें अपनी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति को आत्मसात करना होगा । साथ ही साथ परिवार की एकल व्यवस्था के स्थान पर संयुक्त व्यवस्था को अपनाना होगा। बदलते परिदृश्य में परिवार की संरचनात्मक एकता नहीं हो सकती, लेकिन हमें परिवार की प्रकार्यात्मक एकता पर जोर देना होगा । जिसके कारण विवाह संस्कार को समाप्त होने से बचाया जा सकता है।

Article

शिक्षा का महत्व

• कृष्णकांत वैदिक

शिक्षा शब्द का अर्थ है ज्ञानार्जन करना, किसी कार्य के योग्य होने या निष्णात होने की इच्छा। पशुओं और मनुष्यों में यह अंतर है कि मनुष्यों में परमेश्वर ने पशुओं की अपेक्षा स्वाभाविक ज्ञान अधिक दिया है। बहुत से पशु चाहे रेगिस्तान में जन्मे हों व पानी का तालाब तक न देखा हो, परंतु नदी में छोड़ते ही तैरने लगते हैं, जबकि नाविक के बेटे को तैरना सीखना पड़ता है। शिक्षा जीवन का वह महत्वपूर्ण अंग है जो हमें बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक अनुशासित, संयत और प्रगतिशील बनाए रखती है। शिक्षा से मनन शक्ति, चेतना, सद्बुद्धि, विचारशीलता तथा ज्ञान की प्राप्ति होती है। प्राचीन शिक्षा पद्धति में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को जीवन का लक्ष्य माना गया है।

अथर्ववेद के एक मंत्र में कहा गया है- 'शं सरस्वती सह धीभिरस्तु' जिसका भावार्थ यह है कि शिक्षा के द्वारा जीवन में विवेक का गुण जागृत होना चाहिए, जिससे वह बुद्धि के द्वारा दुर्गुणों को छोड़े और सद्गुणों को अपनाए। यह सुसंस्कृत बुद्धि मनुष्य को आजीवन सुरक्षा प्रदान करती है। कहा गया है-'विद्या ददाति विनयम्' विद्या से सुशीलता प्राप्त होती है। इसके द्वारा ही श्रद्धा और मेधा प्राप्त होती है। प्राचीन समय से शिक्षा का लक्ष्य शुद्ध संस्कार और पवित्र धर्म की भावना जागृत करना रहा है। शिक्षा वह बहुमूल्य निधि है जो हमें स्थूल और सूक्ष्म विषयों का ज्ञान कराती है। शिक्षा हमें इस योग्य बनाती है कि हम धन अर्जित कर सकें, परंतु यह इसे प्राप्त करने का एकमात्र उद्देश्य नहीं होना चाहिए। यह मनुष्य में लौकिक व्यवहारों का ज्ञान कराकर समाज में उचित रूप से व्यवहार करना सिखाती है। शिक्षा के द्वारा ही हमें वेद, उपनिषद, दर्शन की ओर अग्रसर करती है। हम ब्रह्म, आत्मा, लोक-परलोक आदि गूढ़ विषयों का चिंतन करते हैं। हमें ज्ञात होता है कि मनुष्य जीवन बहुमूल्य है। इसका उद्देश्य केवल भौतिक सुख प्राप्त कराना नहीं है, बल्कि आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान और मोक्ष प्राप्त करना है। इसीलिए कहा गया है कि सा विद्या या विमुक्तये अर्थात् विद्या वह है जो हमें अमरता प्राप्त कराती है।

Letter

ई पत्रिका प्रतिबिम्ब के पिछले कई अंक मिले । राणा प्रताप महाविद्यालय सुलतानपुर से ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह 'रवि' के संपादन में प्रतिबिम्ब का प्रकाशन अत्यंत सराहनीय प्रयास है ।इतने दूरस्थ क्षेत्र से ई पत्रिका निकलना अत्यंत प्रेरक कार्य भी है । जहां इससे विद्यालय में होने वाली गतिविधियों का सबको ज्ञान होता है , वहीं छात्र छात्राओं द्वारा विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेने से -कविता आलेख आदि में उनकी अभिरुचि विकसित होती है । यह कार्य अत्यंत कुशलता से ज्ञानेन्द्र विक्रम जी अपने अन्य सहयोगियों के साथ कर रहे हैं , उन्हें बहुत बधाई।

आशा है इस कार्य को वे आगे भी करते रहेंगे और सबको प्रेरित भी करेंगे ।

डॉ . नरेंद्र प्रताप सिंह

(पूर्व चिकित्साधिकारी) , लखनऊ

मैं राणा प्रताप पीजी कालेज में अध्ययन करते हुए खुद को गौरवशाली महसूस करता हूं। मेरे लिए यह सौभाग्य की बात है कि कालेज में मुझे श्रेष्ठ एवं कुशल शिक्षकों का सानिध्य, नेतृत्व, मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ। मेरे हिंदी के शिक्षक और इस न्यूज लेटर के प्रधान संपादक श्री ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह रवि सर को मैं धन्यवाद देता हूं जिनके कारण साहित्य में मेरी रुचि और गहरी हुई है। ज्ञानेन्द्र सर इस क्षेत्र में हमेशा सक्रिय रहते हैं। इस ई-न्यूज लेटर के माध्यम से हम अपने कालेज में हो रही गतिविधियों और सूचनाओं से निरंतर अवगत हो पाते हैं। हमारे कॉलेज में निरंतर अनेक विषयों पर सेमिनार एवं वाद विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन होता रहता है। जिससे विद्यार्थियों के मनोबल और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। इन आयोजनों से छात्रों की बुद्धिलब्धता में वृद्धि होती है , विद्यार्थियों में सोचने , समझने और तर्क करने की क्षमता का विकास होता है। शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य समन्वय और सामंजस्य स्थापित होते हैं। समाज में अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने की क्षमता आती है। सेमिनार में अनेक विश्वविद्यालयों के कुशल विद्वानों के व्याख्यान कराए जाते हैं । जिससे विद्यार्थियों को नए-नए दृष्टिकोण मिलते हैं, उनके ज्ञान में वृद्धि होती है और उनका व्यक्तित्व विकास भी होता है।

इस सबके लिए मै कॉलेज के प्राचार्य व सभी शिक्षकों को नमन करता हूं और पुनः मेरे प्रिय गुरु जी और इस पत्रिका के प्रधान संपादक श्री ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह 'रवि' सर को धन्यवाद ज्ञापित करता हूं।

आशुतोष पाण्डेय

छात्र, एम ए (हिन्दी) प्रथम वर्ष

GLIMPSE OF COLLEGE